

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनपिल्ली एबन्यू
डाक पेटी सं. 4272, कोच्ची-682036, भारत

The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue
P.B. No. 4272, Kochi-682 036, India



फोन } 2311979, 2311901
2311854, 2311803
Phone } 2313415, 2314468
2315065

फैक्स } : 91-484-2313361
Fax }

E-mail : ho@mpeda.gov.in
Website : www.mpeda.com

प्रेस रिलिज

MPEDA-एर माड क्र्याब ह्याचारि प्रयुक्ति पेटेन्ट अधिकार ग्रहण करेछे २० বছरेर जन्य

- এই प्रयुक्ति विभिन्न अ्याकुयाकालचार एबं सीफुड रश्तानि कयेक गुण बाडिये तुलबे: *MPEDA* চেয়ারम्यान

कोचि, १९ मे: भारतेर अ्याकुयाकालचार सेक्टरेर एकटि स्मरणीय माइलस्टोन हल *MPEDA-RGCA* एर माड क्र्याब ह्याचारि प्रयुक्ति। देशेर এই अनन्य प्रयुक्तिके स्वीकृति दिये पेटेन्ट अनुमोदन करेछे भारत सरकारेर कन्ट्रोलार जेनारेल अफ पेटेन्ट, डिजाइन अ्यान्ड ट्रेड मार्कस। এই पेटेन्टेर अनुमोदन प्रदान करा हयेछे २०११ थेके २०३० साल पर्यन्त, २० বছरेर जन्य।

এই ह्याचारि प्रयुक्ति गडे तोला हयेछे माड क्र्याब (बैज्ञानिक नाम – स्काइला सिरिटा) –एर जन्य। दक्षिण पूर्व एशियाय এই प्रजातिर काँकडार खुब चाहिदा, कारण एथाने ज्यास्त काँकडा अति सुखादू सामुद्रिक थावार हिसेबे विबेचित हय। এই प्रयुक्ति निर्मात हयेछे राजीव गान्धी सेन्टार फर अ्याकुयाकालचार (RGCA) द्वारा, एटि हल मेरिन प्रोडाक्ट्स एक्स्पर्ट डेभेलपमेन्ट अथरिटी (MPEDA)–एर गबेष्णा एबं उन्नयन संक्रान्त शाखा।

MPEDA चेयारम्यान श्री के एस श्रीनिवास बलेछेन, भारतीय अ्याकुयाकालचारेर इतिहासे एटि एकटि उल्लेखयोग्य कृतिस्व। कारण देशे এই धरनेर प्रयुक्तिर ক্ষेत्रे এই प्रथम केन्द्रीय सरकार पेटेन्टेर अनुमोदन ग्राह्य करेछे।

श्री श्रीनिवास आरओ बलेछेन, “एटि सेइ चाषिदेर बीजेर प्रयोजनीयताके खुब ভালो भाबे पूरण करबे याँरा शुधुमात्र चिंङ्गिंर चाषे मनोयोगी हओयार परिवर्ते अ्याकुयाकालचारेर विभिन्न रकम प्रजातिर चाषे आग्रह प्रकाश करेछेन। MPEDA এই कृतिस्व उँसर्ग करेछे देशेर सेइ समस्त अ्याकुयाकालचार चाषिदेर याँरा समर्थन जुगियेछेन, एबं RGCA–एर सेइ तरुण वैज्ञानिकदेर याँरा अक्लान्त परिश्रम करे एइ मनोबल-वर्धनकारी पर्याय अर्जन करते पेरेछेन।” श्री श्रीनिवास RGCA संस्वारओ प्रेसिडेन्ट।

येहेतु भारते माड क्र्याबेर अन्य कोनओ ह्याचारि नेइ, ताइ एइ माड क्र्याब ह्याचारि प्रयुक्तिर जन्य पेटेन्टेर अधिकार चेये RGCA आवेदन करेछिल कन्ट्रोलार जेनारेल अफ पेटेन्ट, डिजाइन अ्यान्ड ट्रेड मार्कस –एर काछे, २०११ साले।

तबे, दीर्घ श्रमसाध्य प्रक्रिया सम्पूर्ण करार परे एइ पेटेन्ट अनुमोदन ग्राह्य करा हयेछे। गबेष्णाग साथे युक्त विश्वेर बह प्रतिष्ठान एइ विषय निये विख्यात विशेषज्ञदेर साथे आलोचना करेछे, याँरा नानाविध गबेष्णाग प्रसन्न उत्पादन करेछेन एबं तथ्य ओ परिसंख्यान-सह RGCA –एर वैज्ञानिकदेर साथे एकाधिक बार बैठके बसेछेन। बेश किछु विषये चूडान्त निर्णये पौँछनेर परे, शेष पर्यन्त MPEDA-RGCA एर ह्याचारि प्रयुक्तिके २० বছरेर जन्य पेटेन्ट प्रदान करार सिद्धान्त गृहीत हयेछे, या भारते अबूतपूर्व एकटि घटना।

विशेष करे दक्षिण पूर्व एशियाग देशगुलिते माड क्र्याबेर उँस चाहिदार कथा माथाय रेखे, MPEDA एकटि पाइलट प्रोजेक्टेर उद्योग ग्रहण करेछिल २००८ साल। एइ प्रोजेक्टेर मूल उद्देश्य छिल, माड क्र्याबेर बीज (या क्र्याब-इनस्टार नामे परिचित) उँसपादन करा एबं २०१३ साल नागद ता पर्यायक्रमे परिणत हय

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

(बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एम पी ई डी ए भवन, पनपिल्ली एबन्नु
डाक पेटी सं. 4272, कोच्ची-682036, भारत

The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue
P.B. No. 4272, Kochi-682 036, India



फोन } 2311979, 2311901
2311854, 2311803
Phone } 2313415, 2314468
2315065

फैक्स } : 91-484-2313361
Fax }

E-mail : ho@mpeda.gov.in
Website : www.mpeda.com

भारतের প্রথম বাণিজ্যিক হ্যাচারি-তে, যার উৎপাদন ক্ষমতা ছিল বার্ষিক দশ লক্ষ। এর ক্রমবর্ধমান চাহিদা কারণে, RGCA-এর মাড ক্র্যাব হ্যাচারির বীজ উৎপাদনের ক্ষমতা বৃদ্ধি পেয়ে বার্ষিক ১৪ লক্ষে পৌঁছে গিয়েছে।

ফিলিপিন্সে অবস্থিত আন্তর্জাতিক মানের প্রতিষ্ঠান সাউথইস্ট এশিয়ান ফিশারিজ ডেভেলপমেন্ট সেন্টার (SEAFDEC)-এর অ্যাকুয়াকালচার ডিভিশনের বিখ্যাত বৈজ্ঞানিক, ডঃ এমিলিয়া টি. কুইনিশিও RGCA -এর প্রতি তাঁর পরামর্শ প্রদান করার কার্যক্রম ২০১৩ সাল পর্যন্ত চালু রেখেছিলেন। তারপরই, খুব কম সময়ের মধ্যে এই প্রযুক্তিকে আরও উন্নত করে তোলেন RGCA-এর বৈজ্ঞানিকরা।

MPEDA চেয়ারম্যান বলেছেন যে, এর সবচেয়ে বড় কৃতিত্ব হল ক্র্যাব ইনস্টারের বেঁচে থাকার হার তিন শতাংশ থেকে বাড়িয়ে সাত শতাংশে পৌঁছে দেওয়া, এবং এই কৃতিত্বের ফলে নতুন বিশ্ব রেকর্ড গড়ে তোলা। তাছাড়াও, এই বিশেষ হ্যাচারি ইউনিট এমন ভাবে নির্মাণ করা হয়েছে যাতে, এর প্রতিটি বিভাগ সম্পূর্ণ বায়ো-সিকিওরিটি সুবিধা পাওয়ার পাশাপাশি সেগুলি একই ছাদের নীচে অবস্থান করতে পারে।

RGCA-এর মূল উদ্দেশ্য ছিল বিভিন্ন রকমের অ্যাকুয়াকালচার প্রজাতি যেমন, দেশি ভেটকি, মাড ক্র্যাব, জেনেটিক্যালি ইমপ্রুভড পার্মড তেলাপিয়া (GIFT), কোবিয়া, পোমপানো বা কালো রূপচাঁদা এবং আর্টেমিয়া ইত্যাদির বাণিজ্যিকীকরণের জন্য নতুন উদ্যমে কাজ শুরু করা। এখন এই সংস্থার মূল লক্ষ্য হল, ভারতের সামুদ্রিক পণ্য রপ্তানির হার কয়েক গুণ বৃদ্ধি করা। তার জন্য মনোনিবেশ করা হয়েছে ভালো মানের বীজ উৎপাদন ও সরবরাহ করার উপরে, কারণ এটিই হল অ্যাকুয়াকালচারের প্রধান শর্ত।

শ্রী শ্রীনিবাস বলেছেন, “ভারতে বিবিধ অ্যাকুয়াকালচার প্রমোশনের প্রোজেক্ট বাস্তবায়িত করার জন্য MPEDA-RGCA এর প্রতিটি পদক্ষেপে এবং সব রকম ভাবে অবিরাম সমর্থন প্রদান করার জন্য আমি কেন্দ্রীয় সরকারের বাণিজ্য দপ্তর এবং মৎস্যচাষ দপ্তরকে, ও তার পাশাপাশি ইন্ডিয়ান কাউন্সিল অফ এগ্রিকালচারাল রিসার্চ (ICAR) -কে ধন্যবাদ জানাতে চাই।”

সমাপ্ত